'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013) | December 2017
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य का अनुवाद : स्वरुप एवं समस्याएँ

डॉ. अनिता नेरे
म.स.गा.महाविद्यालय मालेगांव कैम्प
दुरभाष : 9405177633

प्रा.हर्षल गोरख बच्छाव
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय येवला
दुरभाष :9673502475

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है।आज विज्ञान एवं प्रौदयोगिकी की प्रगति के चमत्कार ने दुर -दराज के गॉवो कों भी अपनी पकड से परे नहीं छोडो है । जहॉ एक और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकि ने अपनी परिधि में पुरे विश्व को व्याप्त कर लिया है,वहीं दुसरी और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का साहित्य विश्व की कुछ गिनी-चुनी भाषाऔ की अभिव्यक्ति की निधि माना जाता है।आज विकसित देशों की वैज्ञानिक उपलब्धियॉ आकाश छु रही है । अंतः ज्ञान की अदुनातन उपलब्धियों से परिचय प्राप्त करना किसी भी विकासशील देश के लिए नितांत आवश्यक हो जाता है । भारत जैसे बहु भाषाभाषी विकासशील देश के लिए विकास के पथ पर निरंतर गतिमान होने के लिए विश्व के वैज्ञानिक एवं प्रादयोगिकी की प्रगति चूँकि भारत से बाहर इंग्लेड,फ्रांस, अमेरिका,रुस, आदि प्रगततिशील देशों में हुई है।इस उन्नति को भारत में लाने का एक मात्र तरीका अनुवाद के सिवाय और भला क्या हो सकता है।भारत के अपने वैज्ञानिक,इंजीनियर, आदि भी विदेशी भाषाओ के माध्यम से अनुसंदान कार्य में प्रवृत्त है।अतः भारत जैसे बहुभाषाभाषी देश को अपने ही वैज्ञानिकों,इंजीनियरों आदि से जुडने के लिए भी अनुवाद ही एक मात्र उपाय है।भारत को 21वीं शताब्दी का वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों को अपने देश के कोने - कोने में प्रत्येक भाषा वर्ग के लोगों तक ले जाना,होगा,तभी सच्चे अर्थों में प्रगति के पथ पर प्रशस्त हुआ जा सकता है।

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की प्रमुख समस्याओं में (1) पारिभाषिक शब्दावली की समस्या ,(2) विषय का समुचित ज्ञान, और (3)भाषा की विषयानुकुल वैज्ञानिकता शामिल है।

पारिभाषक शब्दावली की समस्या :

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य के अनुवाद में प्रमुख समस्या पारिभाषिक शब्दों के प्रतिशब्दों की आती है। अंग्रेजी,रुसी, जर्मन, फ्रैंच, आदि

विषय का समुचित ज्ञान :

वैज्ञानिक साहित्यक के अनुवाद में दुसरी महत्वपुर्ण आवश्यकता है-विषय का समुचित ज्ञान । वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में संबंधित विषय का ज्ञान अनिवार्य रुप से आवश्यक है । साहित्यिक अनुवाद का संबंध जहॉ विशेष रुप से भाषा की संरचना एवं रुप से होता है,वहॉ वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक विषयों का अनुवाद प्रमुखतया विषय वस्तु पर आधारीत होता है : वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी विषयों का अनुवाद करते समय किसी भी विषयगत सुचना को एक भाषा से दुसरी भाषा में अंतरीत करते समय अनुवादक का ध्यान यथार्थता एवं परिशुध्दता पर सर्वाधिक केंद्रित होता है । यदि अनुवादक मुल कथ्थों से हट जाता है तो उसकी यह गलती कदापि क्षम्य नहीं हो सकती । दुसरी ओर,साहित्य के अनुवादक को कुछ अंश तक स्वतंत्रता बरतने की छुट होती है कि वह नाटक,उपन्यास,कहानी,कविता, आदि का अनुवाद करते समय मौलिक कल्पना की उडन भर ले ।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक के लिए भाषा ज्ञान के साथ-साथ संबंधित विषय का ज्ञान होना अनिवार्यतः आवश्यक है । यदि यह आवश्यकता पुरी न होती हो तो सहयोगज अनुवाद कराया जा सकता है।विषय एवं स्त्रोत भाषा के जानकार से अनुवाद कराकर लक्ष्य भाषा के जानकार से उसका पुनरीक्षण कराया जा सकता है ।

भाषा की विषयानुकुल वैज्ञानिकता :

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को वैज्ञानिक साहित्य में अनुकुल तर्कपुर्ण भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि विषय की परत-दर-परत भाषा के प्रवाहपुर्ण ढंग से खोली जा सके।वैज्ञानिक साहित्य की भाषा में लक्षणा एवं व्यंजना के लिए कोई स्थान नहीं होता, और न ही भाषा ऊ चमत्कार की ही कहॉ अपेक्षा होती है । इस दृष्टि से वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को बडी सरलता रहती है,बशर्ते उसके पास संबंधित विषय के पारिभाषिक शब्द प्रचुर मात्रा में हों । भाषा के साथ माथापच्ची साहित्यिक अनुवाद की तुलना में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में कम होती है ।

भाषा की विषयानुकुल वैज्ञानिकता कई बार पारिभाषिक शब्दावली की विसंगतियों के कारण भी छिन्न - भिन्न हो जाती है । पारिभाषिक शब्दावली में निम्नलिखित विसंगतियॉ देखने को मिलती हैं :(1)व्यवहारगत विसंगतियॉ,(2)रचनागत विसंगतियॉ,(3) अंतर व्यवहार संबंधी विसंगतियॉ, और (4) अर्थगत विसंगतियॉ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी साहित्य के अनुवाद में अनुवाद को तथ्यात्मकता का पुनःप्रस्तुतीकरण करना चाहिए तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग व्दारा निर्मित संबंधित क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए ताकि भाषा में प्रयुक्त शब्दों की एकरुपता रहे । अनुवाद विचारों का होता है,शब्दों का नहीं, अतः शब्दों में छिपे अर्थ को सम्प्रेषित करने का उद्देश्य अनुवादक का होना चाहिए । उसे शब्दों के फेर में न पडकर अपनी सारी कला,कौशल एवं दृष्टि स्त्रोत भाषा से भावग्रहण और लक्ष्य भाषा में भाव सम्प्रेषण पर केंद्रित कर देनी चाहिए, तभी वह अच्छा ही नहीं, बल्कि आदर्श अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है ।

Scanned with CamScanner